A.B.M. College, Golmuri, JSR

Inter 2nd year "B"

Hindi core

Ch-04 काव्य खण्ड

पाठ का नाम ⇒ आत्मकथ्य

कवि का नाम ⇒ जय शंकर प्रसाद

Q. काव्यांशों के भाव स्पष्ट करें :-

Q. किन्तु कहीं ऐसा न हो कि तुम ही खाली
करने वाले —
अपने को समझो, मेरा रस ले अपनी
भरने वाले।
यह विडंबना! अरी सरलते तेरी हँसी
उड़ाऊँ मैं।
भूलें अपनी या प्रवंचना औरों को
दिखलाऊँ मैं।

Ans कवि आत्मकथा लिखने का आग्रह करने वाले मित्रों से कहता है - मुझे भय है कि मेरी आत्मकथा में तुम मेरी खाली गागर देखो तो कहीं स्वयं को दोषी न समझने लगो। कवि का मन रूपी भँवरा गुन-गुन करता हुआ कहता है - अरे! मैं अपनी कौन-सी जीवनगाथा कहूँ? मेरे सामने एक-पर-एक, न जाने कितनी सारी पत्तियाँ मुरझाकर गिर रही हैं।

आश्चर्य है कि मैंने एक-पर-एक कष्ट देखे हैं, दुःख देखे हैं, निराशाएँ झेली हैं। मैंने सपनों को मरते देखा है।

यह उपहासजनक बात ही होगी कि मैं सीधेपन की हँसी उड़ाऊँ। तात्पर्य यह है कि कवि को अपने भोलेपन के कारण बहुत पीड़ा सहनी पड़ी है। यदि वह अपनी सरलता का उपहास करता है तो यह उसके लिए विडंबना ही होगी। कवि कहता है यदि वह सीधेपन में की गई अपनी भूलों तथा उसका लाभ उठाकर दूसरे लोगों द्वारा दिए गए धोखों की कहानी सुनाता है तो यह बात भी उसके लिए उपहासजनक ही होगी।

कवि मित्रों को संबोधित करते हुए कहता है- भला तुम मेरी भोली-भाली सीधी-सादी आत्मकथा को सुनकर क्या करोगे? अभी मैंने ऐसी कोई महानता भी अर्जित नहीं की है। इसलिए मेरे मन में कुछ भी लिखने की उमंग नहीं है।

'आत्मकथ्य' कविता में प्रसाद जी का अत्यंत विनम्र स्वभाव प्रत्यक्ष दिखाई देता है। अपने विनम्र स्वभाव के कारण ही वे लोगों से कहते हैं कि अपनी आत्मकथा कहने से अच्छा है कि मैं मौन रहकर दूसरों की कहानी सुनूँ।

Scanned with CamScanner

Q.2 "उज्ज्वल गाथा कैसे गाऊँ, मधुर चाँदनी रातों की" — कथन के माध्यम से कवि कहना चाहता है?

Ans कवि कहता है कि मेरे जीवन में जो प्रेम की मधुर चाँदनी रातें आई हैं। उन रातों में मैंने जो प्रेम के उज्ज्वल क्षण जिए हैं, वे बातें मेरे निजी जीवन की पूँजी हैं। जिन सुखों के सपने देख-देखकर मैं जाग जाता था, वे मुझे कभी मिल नहीं पाए। मैं जिस भी प्रिय का आलिंगन करने के लिए बाहें आगे बढ़ाता, वह प्रिय मुस्करा कर भाग जाता रहा। मेरे कामनाएँ कभी सफल नहीं हो पाई।

मेरी प्रेमिका के लाल-लाल गाल इतने मतवाले और सुंदर थे कि प्रेममयी उषा भी अपने सुगंधित मधुर लालिमा उसी से उधार लिया करती थी। आशय यह है कि मेरी प्रेमिका के लाल कपोल उषाकालीन लालिमा से भी मनोरम थे। आज उसी प्रेममयी प्रेमिका की याद ही मुझे चलित यात्री के लिए संबल बनी हुई है। इस प्रकार सुख से वंचित रह जाने की दुखमय गाथा का वर्णन करना कवि के लिए अत्यंत कठिन था।

Scanned with CamScanner

Q.3 इस कविता के माध्यम से प्रसादजी के व्यक्तित्व की जो झलक मिलती है, उसे अपने शब्दों में लिखिए।

Ans इस कविता के माध्यम से हमें प्रसाद जी के व्यक्तित्व की निम्नलिखित विशेषताओं की झलक मिलती है –

स्पष्टवादी :– "आत्मकथ्य" कविता में प्रसाद जी ने खड़ी बोली हिन्दी का परिष्कृत रूप प्रयुक्त किया है। इस कविता में भाषा का शुद्ध साहित्यिक रूप दृष्टिगत होता है। आत्मकथ्य कविता से यह प्रकट होता है कि प्रसाद जी अत्यंत स्पष्टवादी व्यक्ति हैं। उन्होंने इस कविता में अपनी अच्छाई या दुर्बलता दोनों को ही एकदम स्पष्ट शब्दों में व्यक्त किया है।

मित्रता का निर्वाह :– इस कविता से हमें यह पता चलता है कि प्रसादजी को अपने मित्रों से गहरी सहानुभूति थी। मित्रों के अत्यधिक आग्रह करने पर प्रसाद जी अपनी आत्मकथा लिखने के बारे में विचार बनाते हैं परन्तु जब उन्हें यह आभास होता है कि आत्मकथा लिखने से ऐसा भी हो सकता है कि उनके मित्र उनके दुःखों के लिए स्वयं को ही उत्तरदायी समझ लें,

दुखों को सहन करने की क्षमता – प्रसाद जी में जीवन के दुखों को सहन करने की अपूर्व क्षमता है। उनका संपूर्ण जीवन दुखों से भरा हुआ है, परन्तु वे उन्हें भी हँसी में उड़ा देने की क्षमता रखते हैं – अरी सरलते, तेरी हँसी उड़ाऊँ मैं।

संघर्षशील व्यक्तित्व – इस कविता में हमें प्रसाद जी के संघर्षशील व्यक्ति का दर्शन होता है। इनके छोटे-से जीवन में बहुत सी दुख भरी घटनाएँ हुई हैं, परन्तु वे निराश नहीं होते। वे अपनी स्मृतियों को संबल बनाकर अपने जीवन में आगे बढ़ते जाते हैं।

सरल स्वभाव – इस कविता से हमें पता चलता है कि प्रसाद जी सरल स्वभाव के व्यक्ति हैं यही कारण है कि उन्हें दूसरों को पहचानने में भूल भी हुई है और लोगों ने उन्हें धोखा देने में भी सफलता पाई है।

अनुभवी व्यक्ति – प्रसाद जी इस कविता में अत्यंत अनुभवी व्यक्ति के रूप में दृष्टिगत होते हैं। उन्होंने जिस गहराई के साथ पीड़ा का अनुभव किया है, उसी गंभीरता से मिलन के क्षणों को भी अनुभूत किया है। जीवन के अनुभव ने उनके विचारों को परिपक्वता प्रदान की है।